

Padma Shri



GURU MAA KAMALI SOREN

Guru Maa Kamali Soren is the founder of Bharatiya Sanatan Santhal Kalyan Ashram which is working restlessly for the downtrodden community of Santhal people in West Bengal. Guru Maa is a widely popular name across the Santhal people in Malda District, West Bengal for her upliftment work among the Santhal people. Her continuous struggle for poor and helpless people, has given them light of hope and strength to come and conquer the evils.

2. Born in 1st January, 1973, Guru Maa did not receive formal education. She has received her basic teaching from her parents. She dedicated her life for the betterment of the Santhal people.
3. Guru Maa was enlightened by her Guru, Guru Rajen Babaji. She founded Bharatiya Sanatan Santhal Kalyan Ashram in 1998 along with students belonging to Santhal community at Kotalhati, Gazole, West Bengal. Students belonging to different villages of Gazole and Malda were taken care of by giving them shelter and guidance in education. Before starting her new Ashram, she rendered her service at Bathandanga Ashram, Kenpukur, Habibpur, Malda for the students who studied there.
4. Guru Maa is very much inspired by her husband Shri Bhaban Kisku who was a disciple of Gurubaba Shibu Murmu, the Gurubaba of the Santhal community in West Bengal. She has taken the path of social development programme of Santhal people from her husband. Along with social work, she has also initiated highlighting the Sanatani culture of the Great Santhal People. She organized marriage programme for the poor people of Santhali girls and gave them a new life.
5. Guru Maa is working relentlessly for the Santhali people without any help from the Government or any NGO. Her disciples and other well-wishers are helping her in her noble work. Her motto is to bring back the glory of our Great Indian Tradition.



गुरु मा कमली सोरेन

गुरु मा कमली सोरेन, पश्चिम बंगाल में संथाल दलित समुदाय के लिए कार्य कर रहे भारतीय सनातन संथाल कल्याण आश्रम की संस्थापक हैं। गुरु मा पश्चिम बंगाल के मालदा जिले के संथाल लोगों के उत्थान के लिए काम करती हैं और वह संथाल लोगों के बीच अत्यंत लोकप्रिय हैं। उनके निरंतर संघर्ष ने गरीब और बेसहारा लोगों को बुराईयों पर विजय प्राप्त करने की उम्मीद और ताकत दी है।

2. 1 जनवरी, 1973 में जन्मी गुरु मा को औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने का अवसर नहीं मिल पाया। उन्हें अपने माता पिता से प्राथमिक शिक्षा प्राप्त हुई। उन्होंने संथाल लोगों की बेहतरी के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया।

3. गुरु मा को उनके गुरु, गुरु राजेन बाबाजी से ज्ञान प्राप्त हुआ था। उन्होंने वर्ष 1998 में कोटलहाटी, गजोल, पश्चिम बंगाल में संथाल समुदाय के छात्रों के साथ भारतीय सनातन संथाल कल्याण आश्रम की स्थापना की। गजोल और मालदा के विभिन्न गांवों के छात्रों को शिक्षा में आश्रय और मार्गदर्शन देकर उनका ध्यान रखा गया। अपना नया आश्रम शुरू करने से पहले, उन्होंने वहां पढ़ने वाले छात्रों के लिए बथंडांगा आश्रम, केनपुकुर, हबीबपुर, मालदा में अपनी सेवा प्रदान की।

4. गुरु मा अपने पति श्रीभाबन किस्कु से बहुत प्रेरित हैं, जो पश्चिम बंगाल में संथाल समुदाय के गुरुबाबा, गुरुबाबा शिबू मुर्मू के शिष्य थे। उन्होंने अपने पति से संथाल लोगों के सामाजिक विकास कार्यक्रम का रास्ता अपनाया है। गुरु मा ने सामाजिक कार्यों के साथ-साथ महान संथाल लोगों की सनातनी संस्कृति को उजागर करने की भी पहल की है। उन्होंने गरीब संथाली लोगों की लड़कियों के विवाह कार्यक्रम आयोजित किए और उन्हें एक नया जीवन दिया।

5. गुरु मा सरकार या किसी गैर सरकारी संगठन की मदद के बिना संथाली लोगों के लिए अथक रूप से काम कर रही हैं। उनके शिष्य और अन्य शुभचिंतक उनके इस नेक काम में उनकी मदद कर रहे हैं। उनका ध्येय हमारी महान भारतीय परंपरा की महिमा को वापस लाना है।